साहित्य के बिना पत्रकारिता नहीं चल सकतीः राम बहादुर राय

कोलकाता, **12** फरवरी। सुप्रसिद्ध पत्रकार राम बहादुर राय ने कहा है कि साहित्य के बिना पत्रकारिता नहीं चल सकती। श्री राय आज महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में साहित्य और पत्रकारिता के अंतर्संबंध पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने प्रभाष जोशी का उदाहरण देते हुए कहा कि विनोबा को रिपोर्ट करते-करते प्रभाष जी पत्रकारिता करने लगे। उस दौरान वे कविताएं लिखते थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते राम बहादुर राय, उनके दाएं से डॉ. सुनील कुमार, प्रो. कृपाशंकर चौबे, प्रो. चन्द्रकला पाण्डेय, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, अच्युतानंद मिश्र, प्रो. अवधेश प्रधान और विजय दत्त श्रीधर।

प्रभाष जी की किताबों से भी पता चलता है कि उनके भीतर एक साहित्यकार निरंतर सक्रिय रहता था। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ पत्रकार अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि मौजूदा समय में पत्रकारिता में साहित्य के लिए जगह नहीं है। पत्रकारिता के सामने आज भाषा और मुद्दों को समझने की चुनौती है। डा. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि यह यह दौर संक्रमण का है जहां चीजें उद्देश्यहीन हो गई हैं।

पत्रकारिता के इतिहास के विशेषज्ञ विजय दत्त श्रीधर ने कहा कि पत्रकारिता साहित्य का वाहक है। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता के पिछले **190** वर्षों के इतिहास को देखें तो पत्रकारिता व साहित्य ने साथ-साथ विकास किया। साहित्य समालोचक अवधेश प्रधान ने कहा कि कवि वचन सुधा के प्रकाशन के साथ साहित्यिक पत्रकारिता का जन्म हुआ। हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के डेढ़ सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। कवि-कथाकार उदयन बाजपेयी ने कहा कि सत्य और न्याय की गुहार लगाना पत्रकारिता का काम है। पत्रकारिता की पहली पुस्तक भारतीय संविधान है।

समाज में जातीय स्मृति को जीवित रखना लेखक की बड़ी जिम्मेदारी है। संगोष्ठी को पत्रकारिता की अध्येता डा. मंगला अनुजा, डा. धीरेंद्र राय ने भी संबोधित किया। संचालन डा. सुनील कुमार ने किया।

संगोष्ठी को संबोधित करते उदयन वाजपेयी

स्वागत भाषण प्रो.कृपाशंकर चौबे ने और धन्यवाद ज्ञापन प्रो.चंद्रकला पांडेय ने किया।